आपणो ढुंढाड़, आपणी भासा

ढुँढाड़ी भाषा

त्रैमासिक पत्रिका

ढुँढाड़ी भाषा त्रैमासिक पत्रिका

© निर्माण सोसायटी 2017

छापबाळो – बरस:

जुलाई 2017, सवंत-सांवण-2074
छपबाळी कताबां की संक्या-100

लखबाळा:

रामजी लाल बैरवा, पूरण मल बैरवा अर बजरंग लाल बैरवा

फोटुवां बणाबाळो:

मुकेश कुमार जगसरा

सायता करबाळा:

मुकेश कुमार योगी अर ढुंढाड़ी समुदाय

टाईपसेटिंग:

रतन लाल योगी

मलबा की ठोर

निरमाण सोसाइटी

मज्जिद कअ सांकड़अ, सरकारी डाखाना कअ पाछअ,
वाड नंमर-19, दलालां को मोल्लो, चाड़सू,
जेपर, रास्तान-303901
फोन नं०-01429-243997
rajasthanlanguages@nirmaan.org.in

सब अधिकार सुरक्षित हैं

प्रकाशन की अग्रिम लिखित अनुमति के बिना, इस प्रकाशन का कोई भी भाग-आण्विक रूप में, यांत्रिकी रूप में, रिकॉर्डिंग के रूप में या अन्य किसी भी रूप में या अन्य माध्यम से पुन: उत्पादित नहीं किया जा सकता, न ही पुन:प्राप्ति पद्धति में इसका भंडारण किया जा सकता है, या प्रसारित किया जा सकता है।

विसय-सूची

1. जाणकारी.....6

2. प्रस्तावना.....9

3. ढुंढाड़ी भासा मअ परेरक गीत..... 12

ढोला चालो पडबा नअ..... 12

4. ढुंढाड़ी भासा मअ काअण्यां.....13

जोदपर की सेर.....13

पेट मअ भूचर्या.....16

खारो समुदर कियां छ.....19

501 रफ्या देर बता.....22

लोभी पण्डत..... 24

राणी को हार.....26

चातरक बाण्यों.....28

बुडापो खोटो छ..... 30

स्याळ बणग्यो राजो.....32

डोकरा नअ गेला मअ पटक्यायो.....34

5. ढुंढाड़ी भासा मअ साख..... 36

6. ढुंढाड़ी भासा मअ चुटकला.....38

घणी नटयां उमर केद करायो.....38

च्यार कंजूस.....38

डरपोक आदमी..... 39
लुगाई कम उमर की हअगी..... 39
काच फोड़ दियो..... 39
कांईं तो सई लखूं..... 40
छोटा बाळ..... 40
चांद पअ पअलो पग..... 40
घणी सुवांवणी लुगाई..... 41
गेला मअ बोड छ..... 41
7. ढुंढाड़ी भासा मअ मुवावरा..... 42
8. ढुंढाड़ी भासा मअ कावतां..... 44
9. ढुंढाड़ी भासा मअ पेळयां..... 47
10. ढुंढाड़ी भासा मअ भजन..... 48
सोवअ काळी नागणी..... 48
तीन जनम दुख पावअलो..... 49
साधु भाई बिना रअ निवण कुण तरिया..... 50
अचरज देख्यां भारी भाई सन्ता..... 52
वांका दरसण खोटा..... 53
11. ढुंढाड़ी भासा मअ गीत..... 54
चीरमी म्हारी चीरअमली..... 54
कूलखणा की राण्ड..... 56
काळयो कूद पड़्यो मेळा मअ..... 57

डिग्गीपुरी का राजा..... 58
सुण तेजाजी रअ..... 59
12. चोखा बच्यार..... 61
13. ढुंढाड़ी भासा मअ कबिता.....63
घणो चोखो आपणो ढुंढाड़..... 63
ये जी म्हारअ माचे रे डील मअ हेरा..... 64
छोरी जीवन अनमोल छ..... 66
14. ढुंढाड़ी भासा मअ बेमार्यां को अलाज.....67
मलेरियो.....67
15. सरकार की योजना..... 71
खेती पअ लून..... 71
16. आपके विचार..... 73

जाणकारी

आपणो ढुंढाड़, आपणी भासा

ढुंढाड़ पराणा जमाना सूंई धनी परदेस छ। ढुंढाड़ रास्तान की राजदानी छ, ईंमअ न्यारी-न्यारी सेल्यां मलेड़ी छ। ईंको दूसरो नांव गुलाबी नंगरी छ। अण्डअ घणा राजा राज करअ छा। सिकन्दरा का हमला की टेम पअ कच्छवा राजपूत गुवालियर अर नरवर का जंगळा मअ सूं आर जेपर कअ खनअ रअबा लाग्या। कच्छवा बंस को राजो दुलोराव अण्डअ का बडगुजरां नअ हरा दियो अर 1137 ई. मअ ढुंढाड़ मअ निया कच्छवा बंस को राज्य बणा दियो। ईं बंस को कोकिलदेव 1207 ई. मअ मीणा नअ हरा अर आमेर पअ अपणो हक जमा लियो अर आमेर नअ अपणी राजदानी बणा लियो। इंयान ढुंढाड़ राज्य नअ बसाबाळो दुलोराव 1137 ई. अर आमेर नअ बसाबाळो कोकिलदेव 1207 ई. छो।

कच्छवा सासक परतवीराज नअ मर्यां पाछअ आमेर की दसा खराब हअगी। 1527 ई. सूं 1548 ई. तक आमेर मअ चोखो सासन न करबा कअ कारण घर मअ कळेस सोक बण्यो रियो। 1527 ई. सूं 1533 ई.तक परतवीराज को छोटो बेटो पूरण मल आमेर को राजो बण्यो। ईं घर कळेस को फायदो परतवीराज को भाई सांगो उठा लियो अर राव जेतसी कअ साथ मलर सांगानेर बसा लियो।

आपणा ढुंढाड़ को जाऊ जादा कोनअ पण फेर भी यो सारा जगत मअ मसूर छ। ढुंढाड़ जाऊ को फअलाव लमसम 15,50,079 वर्गमील (40349 वर्ग किलोमीटर) को छ। यो जाऊ रास्तान कअ आंथुणी दसा मअ, थार का रेगिस्तान कअ सांकड़अ छ। यो जेपर, टूंक, दोसा अर अजमेर का थोड़ा-साक भाग मअ फअल मेल्यो छ। यो जाऊ अरावली

की पहाड़्यां सूं ढकेड़ो छ। ईं जाऊ मअ ढूंढ नन्दी का बअबा सूं, ईं भाग नअ ढुंढाड़ खवअ छ। ईंमअ ढूंढ नन्दी कअ साथ-साथ बनास, बाणगंगा, मोरेल, मासी, साबी, साक, डाई व बांडी नन्द्यां भी बवअ छ। अण्डअ नरा सारा बंधा भी छ, जस्यांन जमुवारामगढ़, बीसलपुर, मासी, गोळीराव आदी, यांमअ सूं बीसलपुर बांध सूं अजमेर, टूंक अर जेपर जला नअ पीबा बेई पाणी मलअ छ।

'ढुंढाड़ी भासा' भासा-बिग्यान का स्याब सूं सबसूं चोखी भासा छ। 'ढुंढाड़ी भासा' रास्तान मअ बोलबाळी सगळी भासा की बीचली ठोर छ। भासा अर संसकरती को एक अस्यांन को जुड़ाव छ कअ ये दोनी एक दूसरी सूं न्यारी कोन हअ सकअ। ईं भासा नअ पराणा जमाना सूंईं बचाबा की कोसिस करर्या छ। ईं भासा अर संसकरती नअ लम्बा टेम तक रांखबा बेई ईंको बचाव घणो जरूरी छ। आपणी भासा (ढुंढाड़ी) दना-दन मटती जारी छ अर आजकाल का छोरा-छापरा ईं भासा नअ घणा कम काम मअ लेर्या छ। ईं कताब सूं आपणी भासा नअ ओर भी बडाबा की कोसिस कर्यो जार्यो छ। ढुंढाड़ मअ रअबाळा हिन्दी अर दूसरी भासा ओड़ी बडर्या छ, जिसूं ढुंढाड़ी भासा मटती जारी छ। ईं बात नअ ध्यान मअ रांखर या कताब **'आपणो ढुंढाड़, आपणी भासा'** बणाया छां। ईं कताब नअ छापबा को मतलब यो छ कअ "ढुंढाड़ी जाऊ' मअ ढुंढाड़ी भासा नअ कम काम मअ लेर्या छ, ऊंनअ बडाणो छ।

म्हे थांनअ आपणी भासा ढुंढाड़ी सूं जोड़बो चाअर्यां छां। या कताब आपणी ढुंढाड़ी भासा की पअली कताब छ। ईं कताब मअ परेरक गीत, काअण्यां, ढुंढाड़ी साख, हांसी मजाक का चुटकला, मुवावरा, कावतां, पेळ्यां, भजन, लोग-गीत, चोखा बच्यार, कबिता, बेमार्यां को बचाव अर सरकार की योजना छ। ई कताब मअ यां सब

नअ देबा सूं पडबाळा नअ पडबा मअ चोखी लागअली।

निरमाण सोसाइटी एक अस्यांन की संस्था छ, ज्यो न केवल रास्तान मअ बल्कि पूरा भारत का सगळा राज्य का छोटा-मोटा जाऊ मअ बोलबाळी सगळी भासा नअ लिखर उण्डा की भासा संसकरती नअ बचाबा को काम करीं छ। रास्तान मअ पअली बार यानी सबसूं पअली ढुंढाड़ी भासा नअ लिखबा को काम निरमाण सोसाइटी करीं छ। या संस्था गांवां का बडा-बूडा लोगां नअ, जे पडचा-लिख्या कोनअ वांनअ भी पडाबा को काम करीं छ। ईंकअ अलावा समाज मअ फअलेड़ी बरायां अर भस्टाचार नअ मेटबा अर गांवां का विकास बेई काम करअ छ।

ईं कताब नअ बणाबा मअ सगळा "ढुंढाड़ी जाऊ" का लुगाई-मोटचार काअण्यां, साख, चुटकला, मुवावरा, कावतां, पेळयां, भजन, चोखा बच्यार, बेमार्यां को बचाव, सरकार की योजना अर कबिता यां सब नअ बोलर, वांका बारा मअ पूरी जाणकारी देर, हिन्दी अरथ बतार अर जांच कर्रर अपणो-अपणो पूरो-पूरो सअयोग कर्या छ। जिसूं या कताब त्यार ही छ। ईं कताब मअ सअयोग करबाळा आगअ भी अस्यांन ईं निरमाण सोसाइटी को सअयोग करता रवअ, जिसूं ढुंढाड़ी भासा का निया-निया साहित्य त्यार हअ सकअ। म्हे थांका सबका आभारी छां। ईं कताब मअ थांनअ ज्यो भी कमी लागअ थे म्हानअ बता सको छो जिसूं म्हे आगअ की कताबां नअ ओर चोखी बणा सकां।

निरमाण सोसाइटी

प्रस्तावना

हमारा ढुँढाड़, हमारी भाषा

ढुँढाड़ पुराने समय से ही बहुत धनी प्रदेश रहा है। यह राजस्थान की राजधानी है। यह न केवल अपनी विशेषता लिए हुए है बल्कि सभी शैलियो को समाहित किए हुए हैं। इसका उप नाम गुलाबी नगरी है। यहाँ बहुत से राजाओं का राज रहा है। सिकन्दर के आक्रमण के समय कच्छवाह राजपूत ग्वालियर और नरवर के जंगलों से आकर जयपुर के पास बस गये। कच्छवाह वंश के राजा दुल्हेराव ने यहाँ के शासित बड़गुर्जरों को परास्त कर 1137 ई. में ढुँढाड़ में नवीन कच्छवाह वंश राज्य की स्थापना की। इस वंश के कोकिलदेव ने 1207 ई. में मीणाओं को परास्त करके आमेर पर अपना अधिकार जमाया और उसे अपनी राजधानी बनाया। इस प्रकार ढुँढाड़ राज्य का संस्थापक दुल्हेराव 1137 ई. तथा आमेर के संस्थापक कोकिलदेव 1207 ई. था।

कच्छवाह शासक पृथ्वीराज की मृत्यु के पश्चात आमेर की स्थिति दुर्बल हो गई। 1527 ई. से 1548 ई. तक आमेर में अयोग्य शासकों के कारण गृह कलह की स्थिति बनी रही। 1527 ई. से 1533 ई. पृथ्वीराज का छोटा लड़का पूरण मल आमेर का शासक बना। इस गृह कलह का फायदा उठाते हुए पृथ्वीराज के भाई साँगा ने राव जेतसी की सहायता से साँगानेर बसाया।

ढुँढाड़ी क्षेत्र अधिक नहीं है फिर भी इस क्षेत्र को सभी जानतें हैं। ढुँढाड़ी क्षेत्र लगभग 15,50,079 वर्ग मील (40349 वर्ग किलोमीटर) है। यह क्षेत्र राजस्थान के पश्चिम दिशा के रेगिस्तान के पास है। ढुँढाड़ी क्षेत्र जयपुर, टोंक, दौसा, और अजमेर के कुछ भाग में फैला हुआ है। जो अरावली की पहाड़ियों से घिरा हुआ है। इस क्षेत्र में ढूँढ नदी के बहने

के कारण इस क्षेत्र को ढुँढाड़ कहते हैं। इसमें ढूँढ नदी के साथ-साथ बनास, बाणगंगा, मोरेल, मासी, साबी, साक, डाई, व बांडी नदियां बहती है। यहाँ पर अनेक बाँध भी बने हुए हैं, जैसे जमुवारामगढ़, बीसलपुर, मासी, गोलीराव, आदि इनमें से बीसलपुर बाँध से अजमेर, टोंक, जयपुर जिलों को पीने के लिए पानी मिलता है।

'ढुँढाड़ी भाषा' भाषा-विज्ञान के दृष्टिकोण से उत्तम भाषा है। यह राजस्थान में बोली जाने वाली समस्त भाषाओं का मध्य केन्द्र है। भाषा एवं संस्कृति का एक ऐसा जुड़ाव है कि यह एक दूसरे से अलग नहीं हो सकती है। इस भाषा को प्राचीन समय से संग्रक्षित किया जा रहा है। भाषा एवं संस्कृती को अक्षुण बनाये रखने के लिए इसका संग्रक्षण अति आवश्यक है। अपनी भाषा (ढुँढाड़ी) दिनों-दिन लुप्त होती जा रही है। आजकल की युवा पीढ़ी इस भाषा का प्रयोग कम कर रही है। इस पुस्तक के माध्यय से लोगों के द्वारा अपनी भाषा को ओर भी बढ़ाने की कोशिश की जा रही है। ढुँढाड़ी समुदाय हिन्दी व दूसरी भाषाओं की तरफ आकर्षित हो रहा है, जिससे ढुँढाड़ी भाषा लुप्त होती जा रही है। अत: इसको मध्य नजर रखते हुए यह त्रिमासिक पत्रिका **'हमारा ढुँढाड़, हमारी भाषा'** की पत्रिका बनाई गई है। इस पत्रिका को प्रकाशित करने का मुख्य उद्देश्य 'ढुँढाड़ी क्षेत्र' में **'ढुँढाड़ी भाषा'** के कम होते प्रयोग को बढ़ाना है।

हम आपको ढुँढाड़ी भाषा से जोड़ना चाहते हैं। यह ढुँढाड़ी भाषा में पहली त्रिमासिक पत्रिका है। इसमें अपनी ढुँढाड़ी भाषा के प्रेरक गीत, कहानियाँ, ढुँढाड़ी दोहे, चुटकलें, मुहावरे, कहावतें, पहेलियाँ, भजन, लोग-गीत, सूविचार, कविता, स्वास्थ्य उपचार एवं सरकार की योजना है। इस पत्रिका में उपरोक्त बातों को सम्मिलित करने से पढ़ने वालों को पढ़ने में अच्छा लगेगा।

निर्माण सोसायटी एक ऐसी संस्था है, जो न केवल राजस्थान में बल्कि पूरे भारत के सभी राज्य के छोटे से छोटे क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा को लिखित रूप देकर, वहाँ की भाषा संस्कृति को बचाने का कार्य कर रही है। राजस्थान में पहली बार ढुँढाड़ी भाषा को लिखने का कार्य निर्माण सोसायटी कर रही है। यह संस्था गाँवों के बड़े बुजुर्ग लोगों को, जो पढ़े-लिखे नहीं हैं, उनको पढ़ाने का कार्य भी कर रही है। इसके अलावा यह समाज में फैली हुई बुराईयों और भ्रष्टाचार के खिलाफ व ग्राम विकास के लिए कार्य करती है।

इस पत्रिका को तैयार करने में ढुँढाड़ी समुदाय के सभी लोगों ने कहानियाँ, दोहे, चुटकलें, मुहावरे, कहावतें, पहेलियाँ, भजन, सूविचार, स्वास्थ्य उपचार, सरकार की योजना एवं कविता को बोलकर, उनके बारे में विस्तृत जानकारी देकर, हिन्दी अर्थ बताकर एवं जाँच करके अपना-अपना पूरा सहयोग दिया है, जिससे यह पत्रिका तैयार हुई है। इस पुस्तक में सहयोग करने वालों से निवेदन है, कि आप आगे भी निर्माण सोसायटी का इसी प्रकार सहयोग करते रहें ताकि हम, ढुँढाड़ी भाषा में नये-नये साहित्य तैयार कर सकें। हम आप सभी के आभारी हैं। इस पुस्तक में आपको जो भी कमी लगे तो आप हमें बता सकतें हैं, जिससे आगामी प्रकाशन को और बेहतर बनाया जा सके।

निर्माण सोसायटी

ढुंढाड़ी भासा मअ परेरक गीत

ढोला चालो पडबा नअ

आखर धाम मअ चालोनी ढोला पडबा नअ।
आपां साक्सर होवांला तत्काल॥
चालो पडबा नअ.....॥(टेर)॥
ईं कळजुग मअ च्यारो ओर, भरस्टाचार पनपर्यो छ।
बना पडाई ईं दुनियां मअ, जीबो मुस्किल होर्यो छ॥
आखर साथी बुलावअ म्हानअ हाल, चालो पडबा नअ
आपां साक्सर होवांला तत्काल, चालो.....॥(1)
पाटी-पोथी सगळी चीजां उण्डअई मिल जावअली।
आखर साथी बडा परेम सूं म्हानअ खूब पडावली॥
म्हारा गुरूजी! पूछअला सवाल, चालो पडबा नअ
आपां साक्सर होवांला तत्काल, चालो.....॥(2)
पअली, दूजी, तीजी पोथी, आंपा जल्दी सूं पड जावांला।
भारत देस मअ फिर सूं, आखर ज्योती जगावांला॥
जनता साक्सर होवअली खुसहाल, चालो पडबा नअ
आपां साक्सर होवांला तत्काल, चालो.....॥(3)
पड-लिख कर चालाक बणअंलां, सूज-बूज अपणावांला।
रासण को सोदो ल्याबा मअ, कदे नईं ठगावांला॥
'पूरण' देस होअवलो मालामाल, चालो पडबा नअ
आपां साक्सर होवांला तत्काल, चालो.....॥(4)

ढुंढाड़ी भासा मअ काअण्यां

जोदपर की सेर

सन दो हजार सात की बात छ। म्ह, म्हारा दो मामा अर एक म्हारो बायेलो, सगळा जोदपर (एस एस सी) की परिकस्यां देबा गिया छा। म्हे नुवाई सूं तीन बज्यांळी रअलगाडी मअ बअठर जोदपर चलग्या। रात का ग्यारा बज्यां उतर्रर म्हे सगळा रोटी खाबा बेई एक ढाबा पअ चलग्या। रोटयां तो म्हांकन छी, पण साग कोन छो। ईं वास्तअ म्हे, अस्सी रफ्या को साग लिया अर रोटी खार पाछा टेसण पअ आग्या। सारी रात बितायां पाछअ म्हे सुंवारंई उठर सारा काम कर्रर नास्ता कर्या अर चोपासणी (जण्डअ म्हारा बडा मामाजी की परिकस्यां लागणी छी) जाबा बेई चालपड़्या। म्हे पूछता-पूछता दस कलोमीटर चलग्या। सगळा की परिकस्यां लागबा की ठोर हेर्या अर पाछा टेसण पअ आग्या।

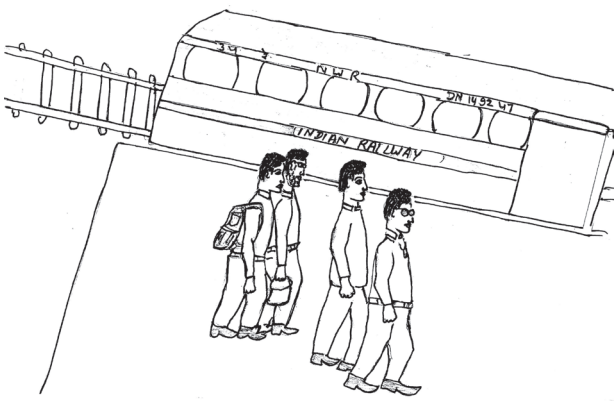

म्हांकन अतरा पीसा कोन छा की म्हे कोई होटल मअ डट सकां, ईं वास्तअ म्हे टेसण पअ ई रात बिताबा बेई आग्या। सारी रात सोया पण माछर घणा खाया। सुंवारंई उठर रोजिना की जियां त्यार हअग्या अर परिकस्यां देर पाछा टेसण पअ आग्या। अब म्हानअ कोई चन्ता कोन

छी। सारो काम चोखो हअग्यो। म्हे सोच्या कअ अब आपां रामदेवरां चालर आवांला। ये सब बातां सोचर म्ह अर म्हारो छोटो मामो रअल पुलिस चोकी कअ सांकड़अ कामळो बछार आडा-टेडा हअग्या। म्हारो बडो मामो अर म्हारो बायेलो दोनी टेसण पअ डोलबा चलग्या। वां दोन्या का थेला म्हांकन ई छा। वअ दोनी (म्हारो बडो मामो अर म्हारो बायेलो) बतळाबा लाग्या कअ ई छोरा (ज्योकी टीटी छो) नअ पूछचा कअ यो नोकरी कियां लाग्यो छो। वअ दोनी जार टीटी नअ पूछचा तो वो टीटी वांकन टीगट माग्यो। अब वांकन कडअ टीगट? वअ जाणअ ई कोन छा कअ अण्डअ घूमबा को भी टीगट लागअ छ। अब

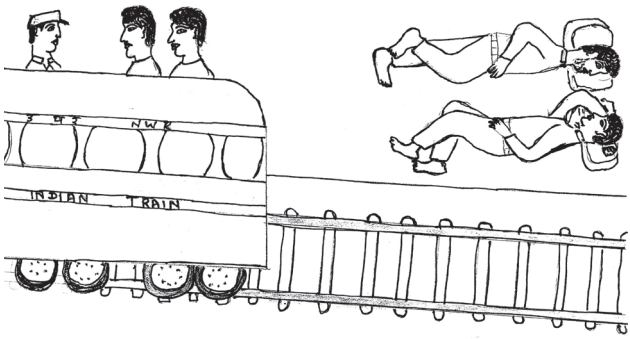

आग्यो वांको टेम खराब, बावळया हअग्या जणा पी मेल्या सराब। ज्यूंई टीटी मांग्यो टीगट, भजबा लागग्या भगवान अपणा आप। म्हारो बायेलो बोल्यो कअ म्हांकी साथ दो जणा ओर छ, म्हांको टीगट वांकन छ। वो म्हांकन आयो पण किसमत फूटी, म्हानअ पुलिसआळो उण्डा सूं उठा दियो अर उपर पुळिया पअ चलग्या। वो लाग्यो दो निया टीगट कटार लेग्यो।

अब टीटी वांनअ एक कमरा मअ बन्द कर दियो, अर बारअ नखळग्यो। ज्यूंई वो बारअ नखळयोर दोनी देख मोखो अर दिया कुंवाड कअ धक्को, अर बारअ की बगल मअर टेसण कअ पाछअ आग्या। म्ह म्हारा मन मअ सोच लियो छो कअ वांनअ गिया नरी देर हअगी अर वअ

तो कडअर-कडअ उळजग्या। म्हे दोनी (म्ह अर म्हारो छोटो मामो) पाछा ऊंई जगां पअ आग्या जण्डअ पअल-पअल छा। वअ दोनी पाछली बगल मअ आया अपणा बुरसेट हात मअ लेर म्हानअ हेला पाड़र्या छा कअ ऊई.....सुणो.....टीगट लियाज्यो म्हे उण्डी कोन आवा अण्डी सूंई बअठांला।

पाछअ वअ मानअ सारी घटना सुणाया। सुणर म्हे घणा हंस्या.....।

सीख:- कद्यां भी झूट न बोलणो चाईजे।

पेट मअ भूचर्या

एक बार एक राजो छो। वो राजो स्याळा का दना मअ रजायां भरवाबा की सोच्यो। वो ऊंका एक सन्तरी नअ खियो कअ पन्दारा नअ बलार ल्या। सन्तरी गियो अर पन्दारा नअ बला ल्यायो। राजो खियो "कअ भाई आपणअ दस-पन्दरा रजायां भराणी छ। तू थारा ओजार लियाज्यो अर अण्डअई आज्याज्यो।"

पन्दारो घरां जार अपणो खटकणो लियायो अर दो च्यार दन मअ सारी रजायां बाणार घरां जार्यो छो। गेला मअ एक नन्दी छी। नन्दी कअ पअला डावा पअ ऊंनअ एक नार दिख्यो। नार दिखतांईं वो पसेवां मअ झांपाझोप हअग्यो। ऊंका पग थर-थर धूजबा लागग्या, जियां "पगां की जमी नखळगी।" वो जगां को जगांईं उबो रियो। उण्डी नअ नार सोच्यो कअ ईं आदमी का गळा मअ जिंयान को ओजार आपां कद्यांईं कोन देख्या, आपां अण्डा सूं चग्यार यो आपां नअ अबार मार देलो।

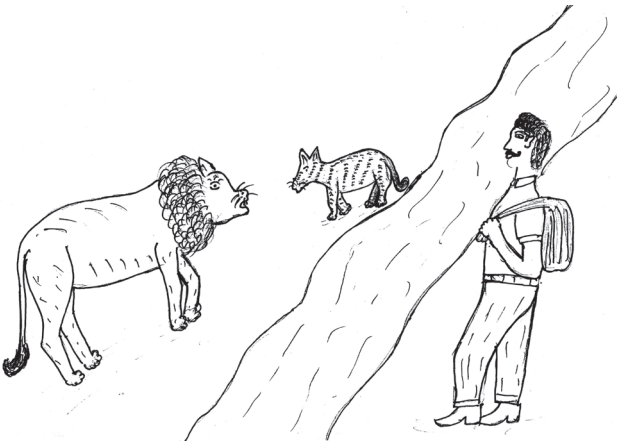

ईं सगळी बारता नअ एक स्याळ देखर्यो छो। स्याळ घणो हुंस्यार छो। वो एक अकल लगायो। वो जार पन्दारा नअ खियो, "कअ कांईं बात छ? इंयां क्यूं उबो छ?" वो बोल्यो कअ सामअ देख थारो बाप, अबार मन खाज्या छ। स्याळ सारी बात समजग्यो। वो भाग्योई जार नार

नअ खियो राजाजी-राजाजी इंयां क्यूं उबा छो? नार बोल्यो "कअ ऊंका गळा मअ देख कांईं लटकर्यो छ?" म्ह अण्डा सूं हाल्योर अबार मारअ छ। स्याळ बोल्यो, "कअ म्ह ईंसूं थांकी ज्यान बचाद्यूं तो .....?" नार बोल्यो, तू खवअ ज्योई करुंलो। स्याळ बोल्यो, "म्ह थांका माथा पअ सात जूती द्यूंलो।" वो बोल्यो ठीक छ। स्याळ ऊंका माथा पअ बअठर सात जूती मार्यो अर बोल्यो, म्ह जार ऊंनअ बातां लगाऊं छूं अर थे नखळ जाज्यो। स्याळ जार पन्दारा सूं बोल्यो, "कअ म्ह ईंसूं,थारी ज्यान बचाद्यूं तो .....?" पन्दारो बोल्यो, "तू खवअ ज्योई करुंलो।" वो बोल्यो, "म्ह थारो पेट खाऊंलो।" वो बोल्यो ठीक छ। अतरामईं वो नार ओड़ी असारो कर दियो अर नार उण्डा सूं भागग्यो। अब स्याळ पन्दारा को पेट खाबा बेई ऊंकअ च्यारुंमेर फरअ। पन्दारा को जीव घोळ हअग्यो। वो एक बला सूं टळ्यो तो दूसरी आगी।

अब वो डर को मार्यो लग-लग धूजअ, पेट मअ कुळळाटी माचरी छी। ज्यूंईं स्याळ पाछअ गियो अर आदमी अणाचुको जोर सूं पाद्यो। पादतांईं स्याळ बोल्यो, "कअ यो थारा पेट मअ कांईं बोलअ छ?" पन्दारा नअ बचबा को मोखो मलग्यो। वो बोल्यो यार तू तो खालअ .....। स्याळ बोल्यो' नईं पअली तू बता.....? पन्दारो बोल्यो खअद्यूं कअ ..... हां यार बता.....स्याळ बोल्यो 'तो सुण

म्ह छोटो छो जद्यां मन म्हारा घरका घणा भूचर्या खुवाया छा, अर अब वअ बडा हअग्या। वअ सगळा इंयां खअर्या छ कअ म्हानअ बारअ नखाळ म्हे ईं स्याळ नअ खावां।

स्याळ डरपग्यो अर बोल्यो कअ यार थारा हात नअ थोड़ी देर पाछअ लगा लअ, मन भाग जाबा दअ। वो बोल्यो अब ये कोन डटअ। अतरामईं स्याळ भागग्यो अर पन्दारो ज्यान बचार आग्यो।

सीख:- अकल बडी हअ छ।

खारो समुदर कियां छ

नरा दना पअली की बात छ। एक गांव मअ दो भाई छा। बडो भाई घणो भागवान अर छोटो घणो गरीब छो। बडा भाई कअ कांईं कमी कोन छी अर छोटा कन खाबा बेई दाणा भी कोन छा। दुवाळी को दन छो। बडा भाई का छोरा-छोरी फटाका छुडार्या छा। सारा गांव मअ खुसी छारी छी। न्यारा-न्यारा पकवान बणार्या छा। पण छोटा भाई कअ घर मअ तो सण्णाटो छार्यो छो। ईं सब नअ देखर छोटो भाई घणो उदास छो। छोटो भाई गेला मअर जार्यो छो तो ऊंनअ एक बूडो आदमी मल्यो। वो बोल्यो' "भाई आज तो दुवाळी छ सारो गांव खुसी मनार्यो छ अर तू

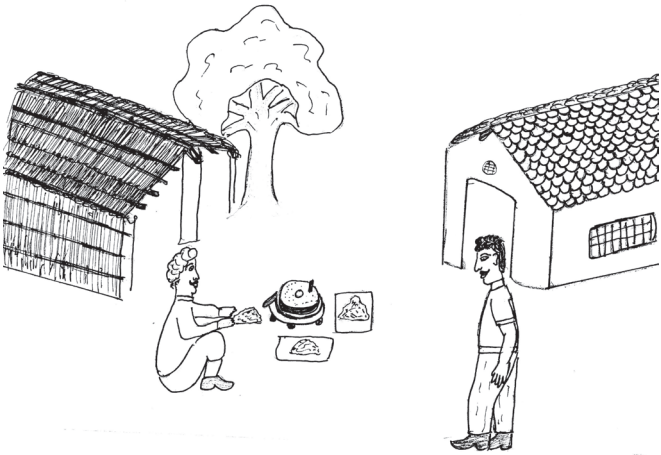

घणो दुखी छ।" छोटो भाई बोल्यो, "कांईं की दुवाळी, बाबा म्हारअ घरां तो खाबा बेई चून भी कोनअ।" म्हारी कोई भी सायता कोन करअ। म्हारा छोरा-छोरी भूखां मर्या छ, अर म्ह कांईं भी कोन कर सक्यो। बूडो आदमी बोल्यो "बेटा म्ह थारी सायता करुंला।" तू ईं लकड़ी का भारा नअ म्हारअ घरां मेल्या। छोटो भाई ऊं लकड़ी का भारा नअ मेलबा चलग्यो। बूडो आदमी खियो "कअ बेटा जंगळ मअ तीन बोना आदमी रवअ छ, वांनअ पुवा घणा पसन्द छ। म्ह तन ये पुवा देर्यो छूं, तू जार ये पुवा वांनअ दे दीज्यो अर वांकन सूं भाटा की जातण

मांगलीज्यो।" छोटो भाई जंगळ मअ गियो उण्डअ ऊंनअ तीन बोना मल्या। वो सारा पुवा वांनअ दे दियो अर वांनअ खियो कअ मन भाटा की जातण देद्यो। वअ बोना छोटा भाई नअ भाटा की जातण देर खिया, "ईंनअ फेर्रर तू ज्यो मांगअलो, या जातण वाई चीज नखाळअली। काम मअ लियां पाछअ ईंनअ लाल लत्ता सूं ढक दीज्यो या बन्द हअ जावअली।"

छोटो भाई जातण लेर घरां आग्यो। घरां आर वो जातण नअ फेर्रर खियो, जातण-जातण चावळ नखाळ। जातण मअर चावळ आग्या। वो फेर खियो जातण-जातण दाळ नखाळ, दाळ आगी। अब ऊंपअ लाल लत्तो पटकर बन्द कर दियो अर सारा घरका दाळ चावळ बाणार खाया। अब नतकई नई-नई (दाळ चावळ, मसालो, चून अर घणी सारी चीजां) नखाळर बजार मअ बेचबा लागग्यो। छोटो भाई खूब भागवान हअग्यो। निया लत्ता, मकान, डाण्डा-ढोर, यानी सब कुछ हअग्या। बडो भाई सोच्यो कअ काल तक ईंकन खाबा बेई दाणा भी कोन छा अर आज अस्यो कांईं हात लागग्यो ज्यो अतरो भागवान हअग्यो। एक दन बडो भाई लुखर ऊं जातण मअ सूं सामान नखाळतो देख लियो। वो ऊंनअ चुराबा की सोच्यो। वो रात नअ उठर ऊं जातण नअ चोर्रर लियायो अर घर मअ आर सारा सामान नअ बांद लियो। सारा सामान नअ लेर एक नाव मअ बअठर, कोई टापू मअ बसबा का इरादा

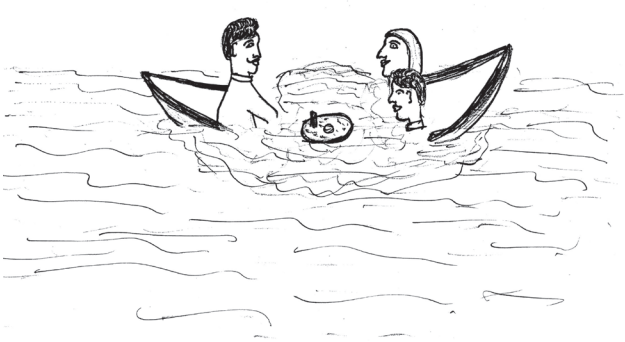

सूं चाल पड़्यो। ऊंकी लुगाई सोची कअ यो आपां नअ कडअ लेर जार्यो छ,“तो वो अपणी लुगाई नअ बताबा कअ ताणी वो जातण नअ फेर्रर खियो ‘जातण-जातण लूण नखाळ।” अब जातण सूं लूण नखळबा लागग्यो। ऊंनअ जातण नअ डाटबो कोन आवअ छो। पूरी नाव लूण सूं भर्रर डूबगी। खवअ छ कअ “वा जातण आज भी चालरी छ जिसूं समुदर खारो छ।”

सीख:- कद्यां भी चोरी न करणो चाईजे।

501 रफ्या देर बता

एक भाण्ड छो। वो मांगबा को काम करअ छो। एक दन वो मांगतो-मांगतो एक रअलगाडी का टेसन पअ चलग्यो। अब वो आरकसण आळा डब्बा मअ बड़ग्यो। वो उण्डअ मांगर्यो छो तो एक जणो ऊंनअ बोल्यो, "कअ भाई चोखा हात-पग दे मेल्यो छ भगवान अर फेर भी तू भीख मांगर्यो छ। सरम न आवअ कअ तन।"भाण्ड बोल्यो "कअ भाई यो म्हारो काम छ अर अब तू चुप रअ।" वो आदमी उठर ऊं भाण्ड का गाल पअ एक थप्पड़ देफाड़्यो। अब भाण्ड बोल्यो "म्हारअ कियां दियो रअ ...।" वो आदमी एक ओर थप्पड़ देफाड़्यो अर बोल्यो इंयां दियो। अब भाण्ड बोल्यो "थारा बाप को छ तो अबकअ देर बता ...।" वो आदमी एक ओर थप्पड़ देफाड़्यो। अब भाण्ड बोल्यो "थारा

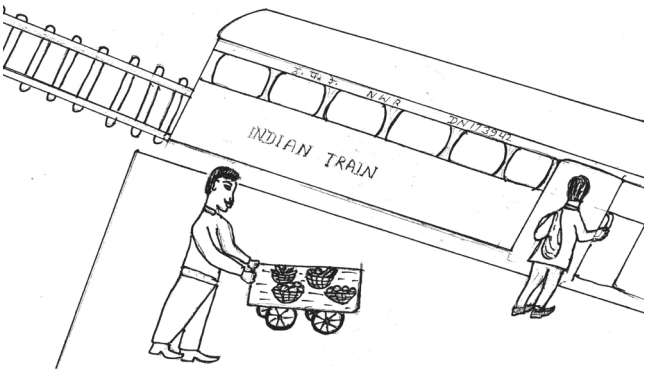

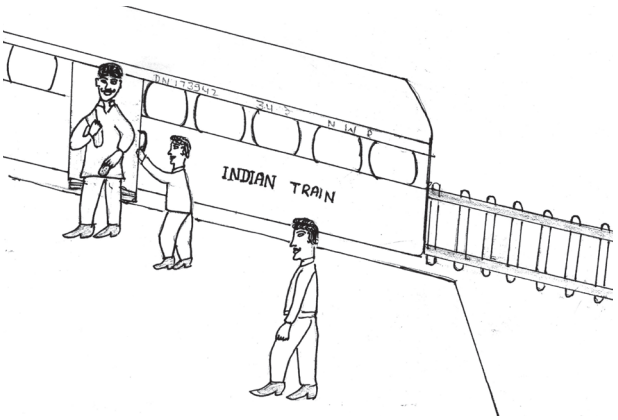

बाप को छ तो अबकअ ओर देर बता .....।" वो आदमी एक थप्पड़ ओर देफाड़्यो। अब भाण्ड बोल्यो "थारा बाप को छ तो 501 रफ्या देर बता.....।" ऊं आदमी नअ 501 रफ्या देणा पड़्या। भाण्ड 501 रफ्या नअ लेर घरां आर आणद सूं रियो।

सीख:- कद्यां कोई को बरो न सोचणो चाईजे।

लोभी पण्डत

एक गांव मअ बदरी नांव को आदमी छो। वो एक गण्डकड़ो पाळ मेल्यो छो। वो गण्डकड़ो एक दन बेमार पड़ग्यो अर थोड़ा दना पाछअ मरग्यो। गण्डकड़ा नअ मर्यां पाछअ बदरी भी बेमार पड़ग्यो। एक दन बदरी कअ घरां एक पण्डत आग्यो अर बदरी नअ खियो कअ तू पाप कर्यो छो, जिसूं बेमार हियो छ। बदरी खियो कअ ये पाप कियां मटअला। पण्डत बोल्यो "पूजा-पाठ कराबा सूं थारा सगळा पाप मटज्याला।" पण्डतजी पूजा-पाठ कुण करअलो। पण्डत बोल्यो "पूजा-पाठ तो म्ह करद्यूंलो पण मन एक घोड़ा को मोल देणो पड़अलो।" बदरी एक घोड़ा को मोल देबा बेई खअ दियो। पण्डत झूठमाट पूजा-पाठ कर दियो अर बदरी सूं पीसा मांगबअ लाग्यो। बदरी ऊंका घोड़ो नअ सअर मअ बेचबअ चलग्यो। एक हात मअ घोड़ा नअ पकड़्यां छो अर एक हात मअ एक टोकरी पकड़्यां छो। पण्डत भी बदरी कअ लअरअ छो। बदरी खियो

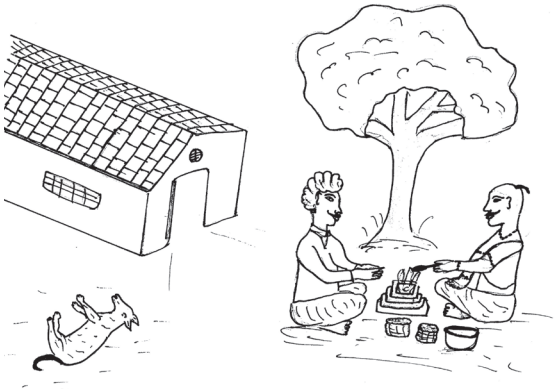

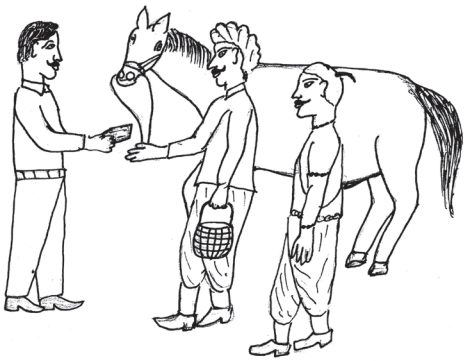

कअ यो घोड़ो बकाव छ, च्यारागा को घोड़ो छ अर एक लाख की टोकरी छ, या टोकरी घोड़ा कअ लअरअ ईं छ। जे ईं घोड़ा नअ लेलो ऊंनअ या टोकरी भी लेणो पड़अलो। थोड़ी बार पाछअ एक आदमी घोड़ा नअ अर टोकरी नअ ले लियो। बदरी एक लाख रफ्या नअ तो थेला मअ मेल लियो अर च्यारागा पण्डत नअ दे दियो। पण्डत च्यारागा लेर घणो दुखी हियो अर मन मअ बच्यार लगायो कअ कद्यां भी पाखण्ड न करणो चाईजे।

सीख:- जस्या सूं जसी ई करणी चाईजे।

राणी को हार

एक बार पअल्यां की बात छ। एक गांव कअ बारअ एक बड़ छो। ऊं बड़ पअ एक कागलो घुस्याळो बणार रअछो अर बड़ की जड़ा मअ एक काळो स्यांप रअछो। वो स्यांप बड़ पअ चडर कागला का बच्या नअ खाज्या छो। कागलो ऊं स्यांप सूं घाडो खुराब हअग्यो। एक दन वो कागलो एक राजा का मअल मअ चलग्यो। उण्डअ राजा की राणी गळा का हार नअ खोलर न्हाबा लागरी छी। कागलो ऊं हार नअ उठा लियो अर लेर बड़ ओड़ी आयो तो राणी भी कागला कअ पाछअ-पाछअ बड़ कअ तळअ आगी। राणी को पाछचो कर्रर, राजा का दरबारी भी आग्या।

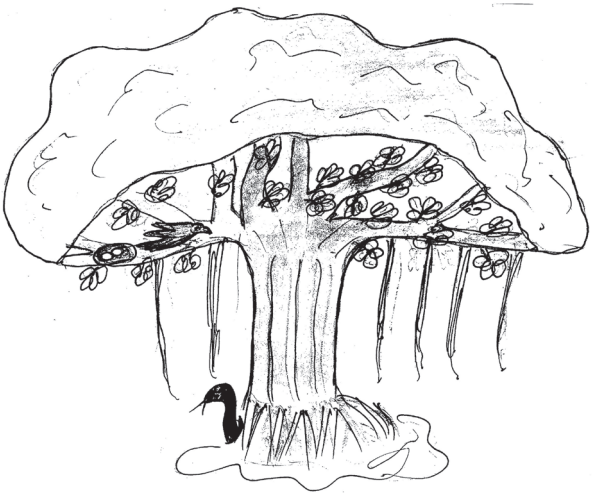

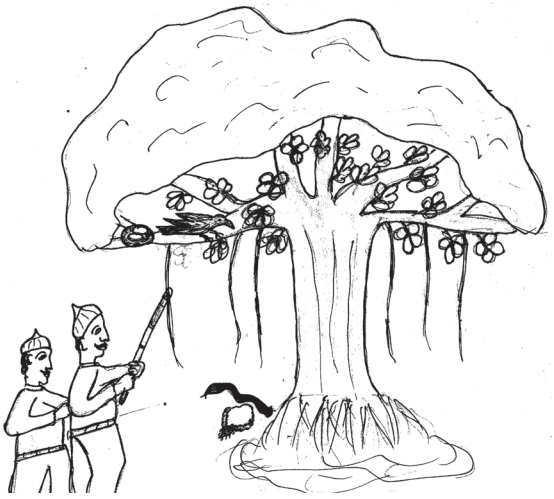

वो कागलो ऊं हार नअ बड़ की जड़ा मअ पटक दियो। राणी ऊं हार नअ लेबअ लागी जद्यां, वो स्यांप बामी मअ सूं

बारअ नकळ्यायो अर राणी नअ खाबअ भाग्यो तो राजा का दरबारी ऊं स्यांप नअ मार दिया। स्यांप नअ मर्यां पाछअ कागलो निकां बडिया रियो।

सीख:- अकल बडी हअ छ।

चातरक बाण्यों

एक बार एक राजो अर बीरबल दरबार मअ बअठ्या छा। राजो बीरबल नअ खियो, “कअ दुनियां मअ चातरक अर बावळ्यो कुण छ।” बीरबल खियो कअ, “चातरक बाण्यां अर बावळ्या मुल्ला हवअ छ।” राजो खियो कअ दखार बता। बीरबल एक मुल्ला नअ अर एक बाण्यां नअ दरबार मअ बला लियो। बीरबल मुल्ला नअ खियो कअ राजो थारी डाडी लेलो बता ईंको मोल कांईं छ। मुल्लो डरपतो-डरपतो बोल्यो कअ दस रफ्या ल्यूंलो। बीरबल मुल्ला नअ दस रफ्या दे देयो अर नाई ऊंकी डाडी बणा दियो। अब बीरबल एक बाण्यां नअ ल्यायो अर ऊंनअ खियो कअ थारी डाडी को मोल बता अकबर बादस्यो लेलो। बाण्यों बोल्यो कअ म्हारी डोकरी मरी जद्यां बीस हजार रफ्या लाग्या छा।

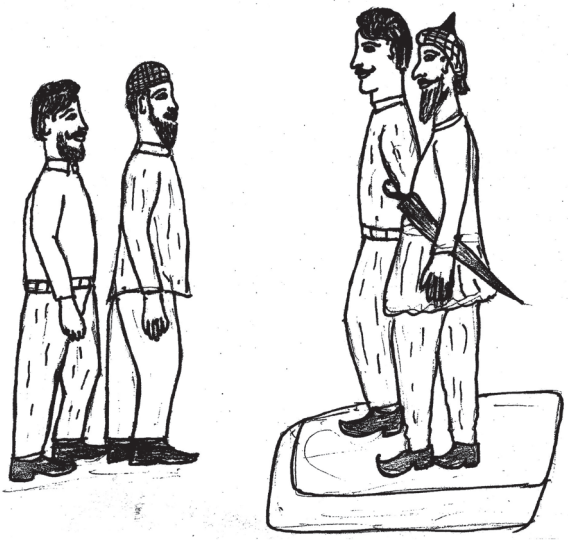

बीरबल बाण्यां नअ बीस हजार रफ्या दे दियो अर नाई नअ डाडी काटबअ बठाण दियो। बाण्यां की डाडी कअ नाई हात लगाबा लाग्योर बाण्यों नाई कअ एक थप्पड़ देफाड़्यो अर बोल्यो, “कअ तनअ ठीक कोनअ कअ बादस्या की डाडी छ।” बाण्यां की बात नअ बादस्यो सुण

लियो तो बाण्यां की डाडी बना काटचांईं, बाण्यां नअ दरबार मअ सूं नकाळ दियो। बाण्यों बीस हजार रफ्या लेर ऊंकअ घरां चलग्यो। बीरबल, अकबर बादस्या नअ खियो कअ देखल्यो बाण्यों डाडी भी न दियो अर बीस हजार रफ्या भी लेग्यो। छअ कअ कोनअ चातरक बाण्यों? अकबर बोल्यो, बीरबल थारी बात सई छ, बाण्यां घणा चारतक छ।

सीख:- अकल बडी हअ छ।

बुडापो खोटो छ

एक बार एक गांव मअ एक डोकरो छो। वो बेमार हअग्यो अर खाटला मअ पड़ग्यो। वो खाट मअ पड़्यो-पड़्यो घाडो दुखी हअग्यो।

डोकरा का घरका ऊंकी सेवा करता-करता घाडा खुराब हअग्या। एक दन ऊं डोकरा का घरका बच्यार लगाया, “कअ ईं डोकरा की खाट नअ घर की मअड़ी माळअ डारद्यां।” ऊं डोकरा का घरका ऊंकी खाट नअ घर की मअड़ी माळअ डार दिया। डोकरा नअ एक टोकरो दे दिया। ऊंनअ खिया कअ तन भूख लागतांईं टोकरा नअ बजा दीज्यो। डोकरो नतकई भूख लागअ जद्यां ऊं टोकरा नअ बजा दे छो। एक दन ऊं टोकरा नअ एक छोरो लेग्यो। डोकरा नअ भूख लागी जद्यां। डोकरो ऊं टोकरा नअ हेर्यो तो टोकरो कोन लाद्यो। डोकरो भूखां मरतो मरग्यो। डोकरा का घरका

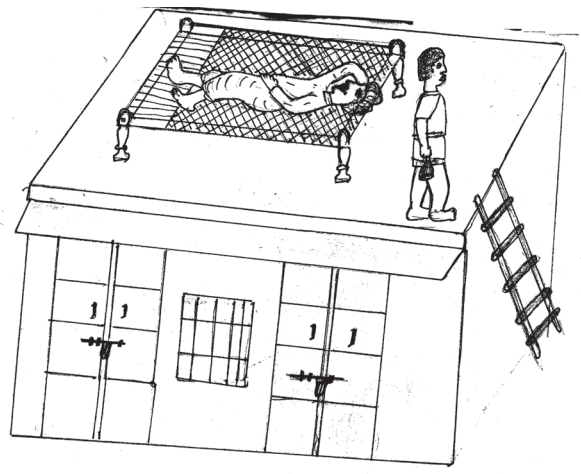

ऊंनअ देख्या तो वो मरेड़ो लाद्यो। पाछअ डोकरा नअ गांव का लोग-बाग देखर खिया.....।

मअड़ी माळअ डोकरो, डोकरा नअ दे दिया टोकरो। टोकरा नअ लेग्यो छोकरो, भूखां मरतो मरग्यो डोकरो। पाछअ डोकरा का घरका घणा पसताया।

सीख:- बडा-बूडा की सेवा करणी चाईजे।

स्याळ बणग्यो राजो

एक बार की बात छ। एक जंगळ मअ एक स्याळ रअछो। वो खुद तो सकार करअ कोन छो अर दूसरा का करेड़ा सकार नअ खार टेम-पास करअ छो। एक बार ऊंनअ खाबा बेई कांईं भी कोन लाद्यो। वो भूखां मरतो एक गांव मअ चलग्यो। जद्यां होळी को टेम छो। एक आदमी भगुनी मअ लाल रंग गोळ मेल्यो छो। स्याळ भूखां मरतो खाबा का चक्कर मअ ऊं भगुनी मअ जा पड़्यो तो, "स्याळजी तो लालचट हअग्यो।" स्याळ तो उल्टोई जंगळ मअ भागग्यो। जंगळ का जन्दावर स्याळ नअ देखर बच्यार लगाया कअ आज तो जंगळ को राजो सेर तो कोनअ अर कोई दूसरो आग्यो। सगळा जन्दावर स्याळ नअ कोई कांईं ल्यार खुवावअ अर कोई कांईं

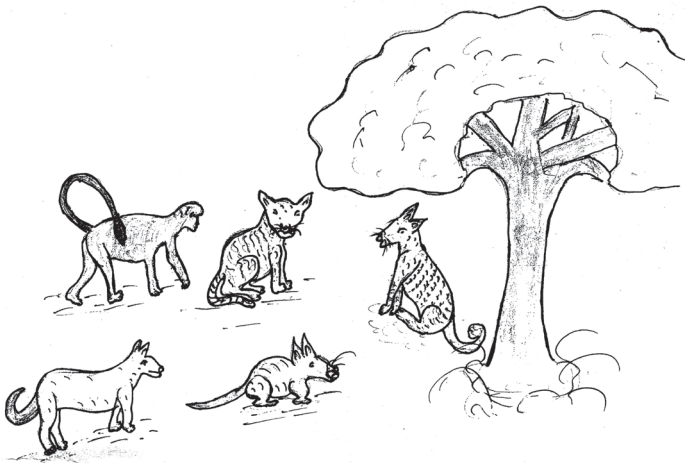

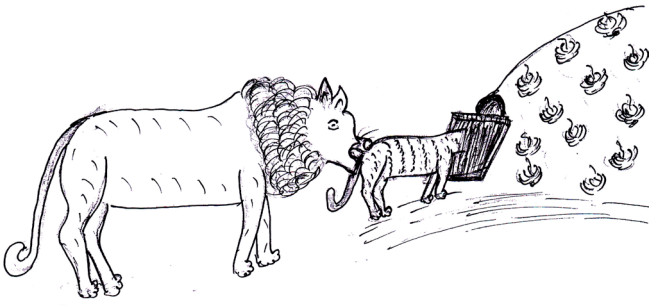

ल्यार खुवावअ। स्याळ तो जंगळ को राजो बणग्यो।

एक दन सगळा जन्दावर बच्यार लगाया कअ आपणा राजा नअ ताज ल्यार पअरावां। गांव मअ सूं एक बडो छाजळो ल्यार स्याळ का गळा मअ पअरा दिया। अतरामईं सेर आग्यो वो सांकड़अ आर जोर सूं दाड़्यो तो सगळा जन्दावर छाना हअग्या। सेर फेर जोर सूं दाड़्यो तो सबसूं पअली स्याळ उण्डा सूं भागग्यो। सेर स्याळ कअ पाछअ भागबअ लागग्यो। स्याळ दुर मअ दसबा लाग्यो तो दुर सकड़ो छो, जिसूं छाजळो उळजग्यो, जिसूं वो दुर मअ न जा सक्यो अर पाछअ सूं सेर आर स्याळ नअ खाग्यो।

सीख:- ओकात का स्याब सूं काम करणो चाईजे।

डोकरा नअ गेला मअ पटक्यायो

एक बार एक मदन नांव को आदमी छो। ऊंको बाप बेमार छो। वो घाडो बेमार हअर मरग्यो। मदन को बायेलो रामू छो। वो रामू नअ खियो, "कअ मन तो बारा दन तक सराव कोनअ अर तू म्हारा बाप नअ गंगाजी मअ पटक्या।" मदन, रामू नअ करायो-भाड़ो देर गंगाजी खन्दा दियो।

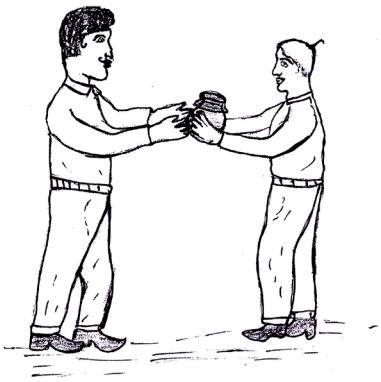

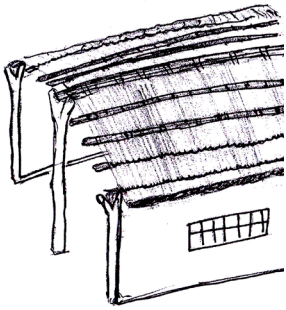

रामू गंगाजी तो गियो कोनअ अर मदन का बाप नअ गेलामईं पटकर आग्यो।

रामू दूसरअ दन मदन नअ घरां दिख्यो तो, मदन बच्यार लगायो कअ गंगाजी जार आबा मअ तो नरा दन लागअ छ अर यो तो बेगोई घरां कियां आग्यो? एक दन मदन, रामू नअ खियो कअ मन रात मअ एक सपनो आयो अर सपना मअ म्हारो बाप आयो अर वो

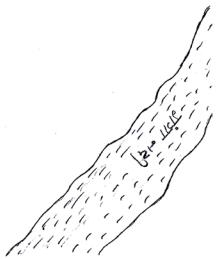

खियो, “कअ तू कस्या आदमी नअ गंगाजी खन्दायो छो? वो तो मन गेलामईं पटकर आग्यो।” रामू बोल्यो, “बात तो सई छ पण थारा बाप नअ तो मर्यां पाछअ भी अकल न आई।” वो अतरो अण्डि आयो जतरो उण्डी जातो तो गंगाजी मईं चल जातो। ईं बात सूं मदन बडो दुखी हियो कअ जादा बोलबाळा अर दगाबाज आदमी पर कद्यां भी बसवास न करणो चाईजे।

सीख:- झूठा बायेला पअ बसवास नअ करणो चाईजे।

ढुंढाड़ी भासा मअ साख

अजगर करअ न चाकरी, पंछी करअ न काम।
दास मलुका यूं खहे, भाई सबका दाता राम॥

आप बिना नईं आसरो, जज तारण जगदीस।
सतगुरू परमानन्द कअ, म्ह चरणा झुकाऊं सीस॥

उपट माळ नईं चालणो, पगां मअ भागअ सूळ।
सूळ भाग पग सूजज्या, हअज्या मानव की धूळ॥

ओम नांव सबसूं बडो, यां सूं बडो न कोई।
जो सेवा करतो ईंनअ, जनम अमर होय॥

कथा करम नअ बांचलअ, लिख्या विदाता लेख।
कलम कच्ची करतार की तो, गलती लिख्या न एक॥

कळयुग मअ देख्या कईं कपटी भगत सुजान।
ग्यानी-ध्यानी बणे तो बुगला कअ समान॥

खेत मअ गेली बुरी, पाड़ोस मअ हेली बुरी, बाबाजी कअ चेली बुरी,
ओर क्या कहूं मेरे दोस्तो, ईं कळयुग मअ ठेगा की थेली बुरी॥

घर पअ आवअ पांवणो, तो नाक चडावअ फूड़।
सब घरका सूं लड़पड़अ, छोरा कअ मारअ धूळ॥

छोरा कअ मारअ धूळ, दांत पति पअ पीसअ।
घूंगट मअ जोरा बोलअ, दांत करकड़ी पीसअ॥

घर मअ होवे दो मण दूद, पण जांवण बिन कुछ भी कोनअ।
खेती करले सो बीगा, पण सांवण बिन कुछ भी कोनअ॥

ढुंढाड़ी भासा मअ चुटकला

घणी नटयां उमर केद करायो

मुजरिम : वकील नअ खियो कअ कोसिस करज्यो उमर केद हअज्या पण मोत की सजा न मलणी चाईजे।

वकील : तू चन्ता मत करअ, तू खअलो जियांईं फअसलो हअज्यालो।

मुजरिम : कांईं हियो?

वकील : घणी नटयां उमर केद करायो छो, नईं तो वअ तन छोडर्या छा।

च्यार कंजूस

एक बार एक गांव मअ च्यार कंजूस छा। च्यारुं कंजूस बतळाया।

पअलो कंजूस : म्हांकअ घरां कोई पांवणा आवअ छ तो, चमची कअ घी लगार रोटी कअ लगाद्यां छां।

दूसरो कंजूस : म्हांकअ घरां कोई पांवणा आवअ छ तो, एक रोटी नअ चोपड़र ऊंसूं दूसरी नअ भी चोपड़द्यां छां।

तीसरो कंजूस : म्हांकअ घरां कोई पांवणा आवअ छ तो, बोतल मअ घी घालर बोतल नअ रोटी कअ रगड़द्यां छां।

चोथो कंजूस : म्हांकअ घरां कोई पांवणा आवअ छ तो, पाड़ोसी रोटी चोपड़अ छ ऊंकी बास सूंईं रोटी चुपड़ज्या छ।

डरपोक आदमी

एक बार दोनी जणा कअ राड़ हअगी।

मोटचार : म्ह थारअ सूं डरपूं कोनअ।

लुगाई : थे तो डरपोक छ। म्हारअ घरां मन लेबअ गिया छा, जद्यां थे सो आदम्यां नअ लेर गिया छा। म्ह तो थांकअ घरां एकली ई आगी।

लुगाई कम उमर की हअगी

एक आदमी ऊंकी लुगाई नअ खियो।

आदमी : अरअ सुणअ छ कांईं? जादा बोलबा सूं उमर कम हअ छ।

लुगाई : हंसर बोली कअ म्ह जादा बोलू छूं, जिसूंईं तो म्हारी उमर कम हअगी। म्हारी चाळीस साल की उमर छी, अब म्ह पच्चीस साल की हअगी।

काच फोड़ दियो

एक बार सोनू ऊंकी दादी नअ खियो कअ रामू खड़की का काच नअ फोड़ दियो।

दादी : कियां फोड़ दियो?

सोनू : रामू खड़की कन उबो छो, म्ह ईंकअ भाटा की बगार दियो तो यो ऊं टेम पअ तळअ बअठग्यो अर भाटो काच कअ माळअ जा पड़्यो।

कांईं तो सई लखूं

पप्पू परिक्स्यां मअ माड़साब नअ खियो।

पप्पू : माड़साब आज तारीक कतरी छ?

माड़साब : परिक्स्यां मअ ध्यान दअ।

पप्पू : माड़साब मअ चाऊं छूं कअ कोपी मअ कांईं तो सई लखूं।

छोटा बाळ

मदन : यार गोपी तू अतरा छोटा बाळ क्यूं कटवायो छ?

गोपी : अरअ यार म्हारअ खनअ तीन रफ्या खुल्ला कोन छा, जिसूं म्ह नाई नअ खियो कअ, तीन रफ्या का बाळ ओर काटलअ।

चांद पअ पअलो पग

एक बार माड़साब मदन नअ सुवाल बूजबअ लागग्यो।

माड़साब : चांद पअ पअलो पग कुण मेल्यो छो?

मदन : नील आर्मस्टरांग।

माड़साब : अर दूसरो पग कुण मेल्यो छो?

मदन : दूसरो पग भी वो ई मेल्यो छो, वो कांईं उण्डअ खोड़ा-लंगड़ी थोड़ी खेलबअ गियो छो।

घणी सुवांवणी लुगाई

एक बार एक लुगाई रोटी बणारी छी। वा ऊंका आदमी नअ बोली अजी सुणअ छ कांईं?

आदमी : कांईं छ?

लुगाई : आजकाल तो म्ह घणी सुवांवणी हअती जारी छूं।

आदमी : तन कियां ठीक छ?

लुगाई : देखो आजकाल तो मन देखर तो रोटचां भी बळबअ लाग्गी।

गेला मअ बोड छ

माड़साब : पप्पू तू नतकई मोड़ो कियां आवअ छ?

पप्पू : माड़साब गेला मअ एक बोड लागर्यो छ, ऊंकअ माळअ लिखेड़ो छ। आगअ इसकूल छ। करपया धीरअ चालअ।

ढुंढाड़ी भासा मअ मुवावरा

आकास-पाताळ एक करबो।

अर्थः- अत्यधिक परिश्रम करना।

वाक्य में प्रयोग :- रामनाराण तो पडाई मअ आकास-पाताळ एक कर दियो।

आंगळी पकड़तो-पकड़तो पूंचो पकड़बो।

अर्थः- किसी वस्तु से तनिक सारा पाकर पूरा अधिकार कर लेना

वाक्य में प्रयोग :- कल्याण तो आंगळी पकड़तो-पकड़तो पूंचोई पकड़ लियो।

एडी सूं चोटी तक को जोर लगाबो।

अर्थः- बहुत परिश्रम करना।

वाक्य में प्रयोग :- पअलाद तो कुमाई करबा मअ एडी सूं चोटी तक को जोर लगा दियो।

ओखळी मअ माथो देबो।

अर्थः- जान बूझकर मुसीबत मोल लेना।

वाक्य में प्रयोग :- मनोज कम पीसा मअ मकान को ठेगो लेर ओखळी मअ माथो दे दियो।

करगाटयां की जियां रंग बदलबो।

अर्थः- कोरा दिखावा करना।

वाक्य में प्रयोग :- रामू तो हर काम मअ, करगाटयां की जियां रंग बदलअ छ।

काना मअ रूई मेलबो।

अर्थः- बिल्कुल नहीं सुनने का बहाना बनाना।

वाक्य में प्रयोग :- रामू की लुगाई तो काम न करबा की मारी काना मअ रूई मेललली।

खून-पसीनो एक करबो।

अर्थः- बहुत परिश्रम करना।

वाक्य में प्रयोग :- सूरज तो खेती को काम करबा मअ खून-पसीनो एक कर दियो।

घी का दीया जुपबो।

अर्थः- बहुत खुशी होना।

वाक्य में प्रयोग :- गोपी की नोकरी लागबा सूं ऊंकअ तो घी का दीया जुपग्या।

छाती पअ मूंग दळबो।

अर्थः- परेशान करना।

वाक्य में प्रयोग :- सोजी की लुगाई तो सगळा घरकां की छाती पअ मूंग दळअ छ।

ढुंढाड़ी भासा मअ कावतां

अण्डी पड़अ तो कुवो, उण्डी पड़अ तो खांईं।

अर्थ:- हर हाल में मुसीबत का आना।

अस्यो सोनो कांईं काम को ज्ये कान छेकअ।

अर्थ:- ऐसा धन किस काम का जो हानि पहुँचाता हो।

आई मांवस गांव कोन बळअ।

अर्थ:- हर बार नुकसान नहीं होता है।

ऊन्दरा नअ हळद को गांठ्यो मलज्या तो पंसारी बण बअठअ छ।

अर्थ:- किसी को थोड़ा-सा लाभ मिल जाता है तो, वह अपने को बड़ा समझता है।

उतावळी खुम्हारी काचा ई बेचअ छ।

अर्थ:- जल्दबाजी में खराब काम कर देना।

ऊंचो मूण्डो कर्रर थूकअ छ, वो ऊंकअ माळअ ई पड़अ छ।

अर्थः- जो आदमी किसी के बारे में बुरा सोचता है, अपने का ही बुरा होता है।

एक तूवा की रोटी कांईं मोटी अर कांईं छोटी।

अर्थः- कोई भी भेदभाव नहीं होना।

करता सूं करअ, पाप दोस सूं डरअ।

अर्थः- बुरा करने वाले के साथ बुरा करें, परन्तु ईश्वर से डरना चाहिए।

करम को बळयो, रान्दअ खीर बणअ दळियो।

अर्थः- विपत्ति में सभी कार्य विपरित होते हैं।

करम ठोक खेती करअ, कअ तो बळद मरअ अर कअ खेती बळअ।

अर्थः- दुर्भाग्य हो तो! किसी नअ किसी कारण से काम खराब हो जाता है।

अपणी छचाच नअ कोई खाटी न बतावअ।

अर्थः- अपनी चीज को कोई भी बुरी नहीं बताता है।

आग लाग्यां पाछअ, कुवो खोदबा सूं कांईं फायदो।

अर्थः- आवश्यकता पड़ने पर काम करने से शीघ्र लाभ नहीं मिलता है।

आरेड़ की टाटी अर गुजराती ताळो।

अर्थः- बेमेल जोड़ा होना।

खोटा काम का खोटा नतीजा।

अर्थः- बुरे कर्मो का बुरा फल मिलता है।

घर का पूत कुंवारा डोलअ, पाड़ोसी का फेरा।

अर्थः- अपना कार्य तो करते नहीं, और दूसरों के कार्यों में हात बटातें हैं।

चेल्यां आगअ चेल चलावअ छ।

अर्थः- बड़े काम के लिए छोटे को करने के लिए कहना।

ढुंढाड़ी भासा मअ पेळयां

अण्डी डूंगर-उण्डी डूंगर, बीच मअ लाठो, उबो-उबो रोटी खावअ, मनख छ कअ, ढाण्डो।

उत्तर :- सरवण कुमार (गुडार्थ ग्यान)

आठ कुटकली नो सो जाळी, जिमअ बअठ्यो बूडो ल्याळी।

उत्तर :- खाट

आरअ नअन्यां रोईता, म्ह नानी तू दोयता।

थारी माई नअ मअ जाई, तू देवर मअ बोजाई॥

उत्तर :- मां-बेटी (गुडार्थ ग्यान)

उजाड़ दंगड़ मअ काकोजी हेला पाड़अ।

उत्तर :- खरवाड़्यो

एक आंगळ की कुकरी, नो आंगळ की पूंच।

भागती जावअ जद्यां, घटती जावअ पूंच॥

उत्तर :- सुई-तागो

अरी-अरी थारी कणियां, कअरी क्यूंरी।

लाल जमीं को घागरो थारो, हर्यो नेफो क्यूंरी॥

उत्तर :- लाल मरची

ढुंढाड़ी भासा मअ भजन

सोवअ काळी नागणी

सोवअ काळी नागणी, जगावअ ग्यानी भंवरो रअ।(टेर)

थारी तो नगरी मअ रअ भंवरा, पांच पटराणी रअ।

भजन करअली वअ तो बिना सुर-बाणी रअ॥

सोवअ काळी नागणी, जगावअ ग्यानी भंवरो ..... ॥(1)

थारी तो नगरी मअ रअ भंवरा, छीपण पटराणी रअ।

कपड़ा रंगअली वा तो बिना रंग-पाणी रअ॥

सोवअ काळी नागणी, जगावअ ग्यानी भंवरो ..... ॥(2)

थारी तो नगरी मअ रअ भंवरा, धोबण पटराणी रअ।

कपड़ा धोवअली बिना साबण-पाणी रअ॥

सोवअ काळी नागणी, जगावअ ग्यानी भंवरो ..... ॥(3)

कहत मछन्दर सुणो जअती गोरख रअ।

ईं पद की कोई करअ सोदना, वोई चतर सुजानी रअ॥

सोवअ काळी नागणी, जगावअ ग्यानी भंवरो ..... ॥(4)

तीन जनम दुख पावअलो

मात -पिता सूं दगो करअलो तीन जनम दुख पावअलो।(टेर)

पअला जनम मअ बळद बणअलो

भारी बोज उठावअलो।

भूखां मरतो सुखअ काळज्यो

जोर-जोर सूं रम्मावअलो॥

मात-पिता सूं दगो करअलो तीन जनम..... ॥(1)

दूजा जनम मअ गण्डक बणअलो

घर-घर रोतो डोलअलो।

जण-जण का तू खावअ ठकोरा

रोट्यां ताणी तरसअलो॥

मात-पिता सूं दगो करअलो तीन जनम..... ॥(2)

तीजा जनम मअ गधो बणअलो

माटी को बजन उठावअलो।

धूप-धूप तू करतो डोलअलो

छाया को सुख न पावअलो॥

मात-पिता सूं दगो करअलो तीन जनम..... ॥(1)

साधु भाई बिना रअ निवण कुण तरिया

साधु भाई बिना रअ निवण कुण तरिया।

आदु रअ पन्त नवण पद मोटा, साद सन्ता की करिया।

हरि जन बिना रअ निवण कुण तरिया॥(टेर)

च्यार जुगां की, च्यार चोकड़ी गणपत आसण धरिया।

आसण माण्ड अगड होई बअठचा, सहजांईं सुमरण करिया॥

हरि जन बिना रअ निवण कुण तरिया..... ॥(1)

नमो-नमो रअ म्हारा, मात-पिता नअ, उतपत्ति पअदा करिया।

घणी नमो रअ म्हारी, धरती माता, ज्यांकअ उपर फरिया॥

हरि जन बिना रअ निवण कुण तरिया..... ॥(2)

नमो-नमो रअ म्हारा आदि गुरां नअ, हिरदे उजाळा करिया।

घणी नमो रअ म्हारा, सादां की संगत नअ, ज्यामअ बअठर सुदरिया॥

हरि जन बिना रअ निवण कुण तरिया..... ॥(3)

नमो-नमो रअ म्हारा, पूरण बरहम नअ नांव नाबी मअ धरिया।

ऊंच-नीच एक सारा रअ भरिया, उनका समरण करिया॥

हरि जन बिना रअ निवण कुण तरिया..... ॥(4)

समज्या रअ ज्यांकी भरमना रअ भागी, खाली गरबड़ करिया।

भेळा हुया रअ, भड़ाभड़ माची रअ, आमा-सामा लड़िया॥

हरि जन बिना रअ निवण कुण तरिया..... ॥(5)

सतगुरू दाता आता दिख्या, इन्दर ज्यूं उलर्याया।

ऊंच-नीच एक सारा रअ बरसअ, सबका रअ पालन करिया॥
हरि जन बिना रअ निवण कुण तरिया..... ॥(6)
बिना रअ पाळ एक सरवर भरिया, कुण डूब्या-कुण तरिया।
हात जोड़कर माळी बोलग्या लखमजी, भवर जाळ सूं टळिया॥
हरि जन बिना रअ निवण कुण तरिया..... ॥(7)

अचरज देख्यां भारी भाई सन्ता

अचरज देख्यां भारी भाई सन्ता।

अचरज देख्या भारी जी।(टेर)

गगन बीच अमरत का कुवा कोई, भरिया सदां सुखकारी जी।

बंगला पुरुस चडअ रअ बिन सीडी, पीवअ भर-भर झारी जी॥

अचरज देख्या भारी जी.....॥(1)

बिना धरती रअ वांनअ कोई मअल चुणायां, ज्यामअ जोत उजाळी जी।

आन्दा रअ देखत मगन होत हअ, बात बतावअ सारी जी॥

अचरज देख्या भारी जी.....॥(2)

बिना रअ बजायां नित-उठ बाजअ, झालर संक नंगारी जी।

बअरा सुण-सुण मगन होत हअ, सुद-बुद खो दिया सारी जी॥

अचरज देख्या भारी जी.....॥(3)

जिंदा मरकर फिर भी जीज्या, बिना भोजन बलधारी जी।

बरमा रअ नन्द सन्त जन बुरळा, जाणअ बात हमारी जी॥

अचरज देख्या भारी जी.....॥(4)

वांका दरसण खोटा

वांका दरसण खोटा रे साधो भाई, वांका दरसण खोटा।
ज्यो राम नांव न भजअ, वांका दरसण खोटा॥(टेर)
सारअ दन तो बळद जियां भटक्यो, सांझ पड़्या घर लोटअ।
पाप कपट सूं दिल भर्यो छ, जियां जळ को लोटचो॥
वांका दरसण खोटा रे साधो भाई.....॥(1)
तीखा-तीखा तलक नकाळअ, लाम्बा रांखअ चोटा।
राम नांव तो भावअ कोनअ, भावअ चींकटा रोटा॥
वांका दरसण खोटा रे साधो भाई.....॥(2)
मन्दर मअ जाकर मअन्त बण बअठचा, नांव कडा लिया मोटा।
भजन भाव तो दुरां रअग्या, पाप कमावअ ओटा॥
वांका दरसण खोटा रे साधो भाई.....॥(3)
माल खायां सूं मांस चडचायो, कंधा हअग्या मोटा।
कहत कबीर सुणो भाई साधो, जमका देला सोटा॥
वांका दरसण खोटा रे साधो भाई.....॥(4)

ढुंढाड़ी भासा मअ गीत

चीरमी म्हारी चीरअमली

चीरमी म्हारी चीरअमली।

चीरमीरा डाळा च्यार भोळी म्हारी चीरमी रे॥(टेर)

चीरमी बाबोसारी लाडअली, वा तो मोत्यां,

बीचली लार वारी जाऊं चीरम म्हे।

चीरमी मामोसारी लाडअली, वा तो काळअज्ये री कोर

भोळी म्हारी चीरमी रे॥

चीरमी म्हारी चीरअमली, चीरमीरा डाळा च्यार भोळी म्हारी ..... ॥(1)

ऊंचले डाळे म्हे चडां, म्हारे निचले डाळे जेठ वारी जाऊं चीरमी म्हे।

उतरो जेठजी म्हे चडां, कोई जोऊं थारअ बाबो सारी बाट,

भोळी म्हारी चीरमी रे॥

चीरमी म्हारी चीरअमली, चीरमीरा डाळा च्यार भोळी म्हारी ..... ॥(2)

चड़ती नअ दिखअ मेड़तो, उतरती नअ दिखअ अजमेर वारी जाऊं चीरमी म्हे।

चड़ती रो चमके चूड़अलो, उतरती रो नोसर हार

भोळी म्हारी चीरमी रे॥

चीरमी म्हारी चीरअमली, चीरमीरा डाळा च्यार भोळी म्हारी ..... ॥(3)

बाबो-सारे चडबा घोड़लो, म्हारे बीरो-सा रे चडबा तोड़अ

भोळी म्हारी चीरमी रे।

घुड़लेरे बाजण घूगरा, कोई तोड़र बाजण लुम वारी जाऊं चीरमी रे॥
चीरमी म्हारी चीरअमली, चीरमीरा डाळा च्यार
भोळी म्हारी ..... ॥(4)

कूलखणा की राण्ड

कूलखणा की राण्ड बजाई रण्डवो रअबो ठीक।(टेर)

ज्यांनअ मलगी राण्ड करकसा फूटच्या जिंका भाग।

पाड़ोस्यां कअ जाडो चडज्या, सुणकर ईंकी छींक॥

कूलखणा की राण्ड बजाई रण्डवो रअबो ठीक.... ॥(1)

तीन मजल कअ माळअ चडकर, बगावअ छ आग।

हरदम राड़ मचावअ, घर नअ जळाकर करदे राख॥

कूलखणा की राण्ड बजाई रण्डवो रअबो ठीक.... ॥(2)

समजाबा की एक न लागअ, फूंपावअ ज्यूं काळो नाग।

धरती माळअ पग न टेकअ, कर-कर ऊंची नांक॥

कूलखणा की राण्ड बजाई रण्डवो रअबो ठीक.... ॥(3)

सगा कसम कअ जूता मारअ, नतकई करअ जंजाळ।

समजाबाळा हारग्या, देता-देता सीख॥

कूलखणा की राण्ड बजाई रण्डवो रअबो ठीक.... ॥(4)

काळयो कूद पड़्यो मेळा मअ

काळयो कूद पड़्यो रअ मेळा मअ साइकल पंचर करल्यायो॥(टेर)

दो दन डटजा रअ डोकरिया, छोरी म्हारी बाजरियो काटअ।

काळयो कूद पड़्यो रअ मेळा मअ साइकल पंचर... ॥(1)

बाजा बाजरिया डूंगर मअ, छोरी तन लेबाळो आयो।

काळयो कूद पड़्यो रअ मेळा मअ साइकल पंचर... ॥(2)

जेपर जाज्यो कब्जो ल्याज्यो, कब्जो लाल बुंटी को।

काळयो कूद पड़्यो रअ मेळा मअ साइकल पंचर... ॥(3)

छोरी चटक-मटक मत चालअ, कमर मअ लचको पड़ज्यालो।

काळयो कूद पड़्यो रअ मेळा मअ साइकल पंचर... ॥(4)

जल्दी सींदअ रअ दरजी का, छोरी म्हारी सासरिये जासी।

काळयो कूद पड़्यो रअ मेळा मअ साइकल पंचर... ॥(5)

काजळ टीकी का नखरा मअ, छोरी म्हारी मर मत जाज्यो।

काळयो कूद पड़्यो रअ मेळा मअ साइकल पंचर... ॥(6)

डिग्गीपुरी का राजा

म्हारा डिग्गीपुरी का राजा बाजअ छ नोबत बाजा।

बाजअ छ नोबत बाजा म्हारा डिग्गीपुरी का राजा॥(टेर)

आंधा नअ आंख्यां दीज्यो ओ म्हारा डिग्गीपुरी का राजा।

बाजअ छ नोबत बाजा म्हारा डिग्गीपुरी का राजा... ॥(1)

सांवण मअ झुला झुलअ म्हारा डिग्गीपुरी का राजा।

नावां मअ बअठर आवां म्हारा डिग्गीपुरी का राजा॥

बाजअ छ नोबत बाजा म्हारा डिग्गीपुरी का राजा... ॥(2)

राजाजी रोड़ बणाया, म्हं बेठ रेल मअ आयो म्हारा डिग्गीपुरी..।

थारअ पगां ऊंबाणी आऊं माथा पअ हाण्डी ल्याऊं म्हारा डिग्गीपुरी..॥

बाजअ छ नोबत बाजा म्हारा डिग्गीपुरी का राजा... ॥(3)

बांझड़ नअ बेटो दीज्यो म्हारा डिग्गीपुरी का राजा।

थारअ घणा जातरी आवअ, मसरी मेवा भोख लगावा म्हारा डिग्गीपुरी का राजा॥

बाजअ छ नोबत बाजा म्हारा डिग्गीपुरी का राजा... ॥(4)

निरधन को हेलो सुणज्यो म्हारा डिग्गीपुरी का राजा॥

बाजअ छ नोबत बाजा म्हारा डिग्गीपुरी का राजा... ॥(5)

सुण तेजाजी रअ

सुण तेजाजी रअ...सांवण मअ रअ-सांवण मअ,
काळी-काळी रअ बादळयां गाजअ रअ।
अलगोजा तो मीठा-मीठा बाजअ रअ,
थारअ ढोल नगांड़ा बाजअ रअ तेजाजी॥(टेर)
सुण तेजाजी रअ...बम्बी पअ रअ बम्बी पअ रअ
काळा को तो बचन निभायो रअ।
लाछा की गायां तो बेगी ल्यायो रअ तेजाजी॥
सुण तेजाजी रअ...सांवण मअ रअ-सांवण मअ... ॥(1)
सुण तेजाजी रअ...आंकड़ मअ रअ कांकड़ मअ रअ,
थारअ गावअ गुवाळया गीत रअ।
अलगोजा मीठा, बाजअ रअ तेजाजी... ॥
सुण तेजाजी रअ...सांवण मअ रअ-सांवण मअ... ॥(2)
सुण तेजाजी रअ...भादुड़ा की
दसां को मेळो बडो भारी रअ।
कळजूग मअ मईमा भारी रअ,
दरसण नअ आवअ नर-नारी रअ तेजाजी... ॥
सुण तेजाजी रअ...सांवण मअ रअ-सांवण मअ... ॥(3)
सुण तेजाजी रअ...खरनाळया मअ रअ,
सुरसरा मअ थारी निकळअ बन्दोर्यां भारी ओ।

लिलण की तो मईमा न्यारी ओ,

थारअ नाचअ टाबर नर-नारी ओ तेजाजी॥

सुण तेजाजी रअ...सांवण मअ रअ-सांवण मअ... ॥(4)

चोखा बच्यार

1. अपणो काम, अपणी बात अर अपणा बायेला, यां सब कअ साथ सांचो रअणो चाईजे।

हेनरी डेविस थोरेओ

2. कद्यां भी कोई आदमी अणाचूको ग्यानी कोन हियो।

लुसियस अन्नायुस सेनेका

3. कद्यां भी आज का काम नअ तड़का पअ मत छोडो।

बेंजामिन फ्रैंकलिन

4. अगर आपां अपणा काम मअ लाग्यां रअवां तो आपां जो चावां वो कर सकां छा।

हेलेन केलर

5. अपणी भूल अपणा ईं हातां सूं सुधर जावअ तो या ऊंसूं घणी चोखी छ कअ, कोई दूसरो ऊंनअ सुधारअ।

प्रेमचंद

6. असल मअ गलती तो वा छ, जिसूं आपा कांईं कोन सीकां।

जॉन पावेल

7. एक सांचो बायेलो थानअ जद्यां तक कोन टोकअ जद्यां तक थे गलत काम कोन करअ।

अर्नोल्ड एच ग्लासो

8. अगर थे एक बार थांका साथी को बसवास तोड़ दे छ, तो दुबारां सूं ऊंको सम्मान न पा सकअ।

अब्राहम लिंकन

9. बडिया सोच अर बच्यार सूं आदमी बडो बण सकअ छ।

भगवान महावीर

10. बीतेड़ो दन कद्यां भी पाछा कोन आवअ।

बेंजामिन फ्रैंकलिन

ढुंढाड़ी भासा मअ कबिता

घणो चोखो आपणो ढुंढाड़

घणो चोखो आपणो ढुंढाड़॥(टेर)

सगळा रवअ मलर बांटअ घणो प्यार,

काम करअ अपणो-अपणो, न करअ कोई पअ अत्याचार।

देख-देख हरसअ मन, अण्डअ का चोड़ा दरबार,

न मानअ तो देखल्यो, आपणा जेपर मअ जार॥

घणो चोखो आपणो ढुंढाड़..... ॥(1)

लागअ चोखा मअल-माळक्या हवामअल झरोकादार

न्यारी छ छटा किला की, मन करअ देखा, बार-बार।

मन्तरी, सन्तरी बअठचा छ, अण्डअ सजा अपणो दरबार

जन्तर-मन्तर लागअ सुवांवणों, चोड़ा-चोड़ा दुवार॥

घणो चोखो आपणो ढुंढाड़..... ॥(2)

म्हारो मन खुसी सूं भरजावअ, जद्यां करअ कोई ईंकी बात,

सारा आदमी खुसी सूं झुमअ, जियां लागर्यो फसलां मअ पाणी खात।

सारा जग मअ यो घणो चोखो साफ, जियां काच की जात,

लागअ सुवांवणी म्हारी बोली भासा, ईंकाई आवअ सपना सारी रात॥

घणो चोखो आपणो ढुंढाड़..... ॥(3)

ये जी म्हारअ माचे रे डील मअ हेरा

ये जी म्हारअ आवे रे /माचे रे डील मअ हेरा।
घर का पूत कुवांरा डोलअ यजमाना का फेरा॥
लम्बो चोड़ो डील हो गयो डाडी-मूछ्यां आ गयी।
म्हारा जस्या छोरा-छापरा नअ लुगायां भा गयी।
म्हारा सूना पलंग पअ डेरा॥
घर का पूत कुवांरा डोलअ यज..... ॥(1)
लाद्या-माद्या सभी परणग्या, परण्या सभी कुवांरा।
यांकअ घर गणगोर कर रही रोज आंगणे गारा।
सब परण्या एरा-गेरा, रे सब परण्या रे॥
घर का पूत कुवांरा डोलअ यज..... ॥(2)
नुकड़ का बगला पअ देखो छोरी छेल कुवांरी
ओर होटां मअ मुळकावअ गोरी भर-भर कअ सिसकारी।
या तो खावअ रे घुमर घेरा॥
घर का पूत कुवांरा डोलअ यज..... ॥(3)
रात होय जद रोटी खाकर म्ह कटिया पअ जाऊं।
ओर ऊंचा-नीचा सपना देखूं गोट गळिंदा खाऊं।
म्हारअ कद बंदवासी सेरा।
अतरी सुणके पिताजी बोल्या, सुणलअ बात म्हारी।
अरअ चोखो भलो डील हअ भाया, मारअ मति कटारी।

वा तो खून पीवगी तेरा, थारा उतर जाय सब हेरा
यज माना कअ जाबा दअ मन करवाबा दअ फेरा
घर का पूत कुवांरा डोलअ यज..... ॥(4)

छोरी जीवन अनमोल छ

परेम भर्यो एक गीत छ छोरी, जीवन को संगीत छ छोरी।
जीवन को अनमोल छ छोरी॥(टेर)
छोरी एक सीतल बयार, छोरी एक रिमझिम फुंवांर।
ज्ये महकावअ घर को आंगण, छोरी छ वां कळी बहार॥
जीवन को अनमोल छ छोरी.....॥(1)
एक चोखो मोसम जस्यां मन को मीत छ छोरी।
छोरी काजल, छोरी कंगना, मन मन्दर मअ बअठी अंगना॥
जीवन को अनमोल छ छोरी.....॥(2)
छोरी सूंई संसार छ अपणो, छोरी सूंई छ हर एक सपनो।
सात रंगा को ईनदरधनुस, जीवन भर को परीत छ छोरी॥
जीवन को अनमोल छ छोरी.....॥(3)
छोरी लछमी, छोरी सीता, छोरी कुरान, छोरी गीता,
छोरी छ एक गोरव गाथा, छोरी छ तो सब जग जीता॥
जीवन को अनमोल छ छोरी.....॥(4)
रीति-रिवाज की डोर छ छोरी।
अस्यो पावन रीत छ छोरी॥
जीवन को अनमोल छ छोरी.....॥(5)

ढुंढाड़ी भासा मअ बेमार्यां को अलाज

मलेरियो

मलेरिया खून को एक परजीवी की छूत छ, जिसूं कांपणी लागअ छ अर जोर की बुखार आज्या छ। मलेरिया माच्छरां सूं फअलअ छ। माच्छर मलेरियो हियेड़ा आदमी का खून नअ चूसती टेम रोग का कीटाणु नअ बी चूस ले छ। ऊंकअ पाछअ जद वो कस्या बी आदमी नअ खावअ छ तो वां कीटाणु नअ, ऊं आदमी का खून मअ छोड दे छ अर ऊं आदमी कअ बी मलेरियो हअज्या छ।

मलेरिया का लक्सणः-

1 मलेरिया को बुखार हर पांतरअ या तीसरअ दन मअ चडअ छ अर चडचां पाछअ नरी देर तक रअ छ। ईंका तीन चरण हअ छ।

(1) यो जाडो लागर सुरू हअ छ अर माथो बी दुखअ छ। आदमी नअ 15 मिनट सूं एक घण्टा तक जाडो लागअ छ।

(2) यो बुखार जाडो लागर चडअ छ, तापमान 40 या ईंसूं बी जादा हअज्या छ। आदमी अपणा-आप नअ कमजोर समजअ छ। ऊंकी चमड़ी लाल हअज्या छ। कोई टेम पअ आदमी को माथो बी सूनो हअज्या छ अर बुखार 5, 6 घण्टा तक बण्यो रअ छ।

(3) आखरी मअ आदमी कअ पसीना आज्या छ अर बुखार उतरज्या छ। बुखार उतर्यां पाछअ आदमी कमजोरी मअसूस करअ छ, पण अस्या वो पूरी तरअ सूं निकां लागअ छ।

2 मलेरिया को बुखार हर पांतरअ या तीसरअ दन मअ चडअ छ। पण सुरू मअ यो बुखार रोजिना चड सकअ छ। बाळक या आदमी जिनअ

पअली सूं मलेरिया को बुखार आयोड़ो छ। ऊंनअ मलेरिया का बुखार को, खासतोर सूं सई नमूनो न हअ। जिसूं बरखां का दना मअ जिनअ बी अस्यो बुखार हअ अर जिको ठीक न पड़अ तो ऊंका खून की जांच जरूर (मलेरिया संबंधी) कराणो चाईजे।

3 लम्बा टेम तक मलेरिया सूं खून की कमी हअज्या छ। क्यूंकि मलेरियो लाल खून का कणा नअ खतम करदे छ।

4 मलेरिया का बुखार सूं तिल्ली बडज्या छ अर दुख बी हवअ छ।

5 मलेरिया का बुखार सूं लीवर (यकृत) बडज्या छ अर दुख बी हवअ छ। ईंसूं पीळ्यो बी हअ सकअ छ।

6 सबसूं खतरनाक अर ज्यानलेवा मलेरिया-दिमाकी मलेरिया बुखार हअ छ। यो माथा नअ जादा परेसान करअ छ। अगर कोई कअ बी जोर को जाडो लागर बुखार अर पसीना आबा लागज्या छ। आदमी नअ नींद बी आबा लागज्या छ। ऊंनअ जगाबो बी कर्डो हअज्या या अणाचूका झटकादार (एठन) हअबा लागज्या छ व बेहोस हअज्या तो ऊंनअ बेगा-सा डाखाना मअ ले जाणो चाईजे। अगर आदमी को बेगा-साक अलाज सुरू न कर्या तो वो मर बी सकअ छ।

(जीं बाळक नअ माई को दूद पीबा मअ कठिनाईं आरी छ ऊंनअ मलेरियो हअ सकअ छ।)

मलेरिया की देखभाळ अर उपचार:-

1 अगर थानअ मलेरियो हअबा को बअम छ या बार-बार मअ बुखार हअ छ तो खून की जांच कराणो चाईजे। जीं ठोर मअ खतरनाक किस्म को मलेरियो हअ जियां फेलिसी पेरम आदि हअ तो बेगा-साक डागदर नअ दखाणो चाईजे।

2 अगर खनअ डाखानो न हअ तो थांका आस-पास मअ मलेरियो आम बात छ, कस्यो बी जोर की बुखार हअ तो मलेरियो मानर उपचार एवं दुवाई लेणो चाईजे।

3 अगर मलेरियो क्लोरोक्वीन (गोळी) लेबा सूं ठीक हअज्या छ, अर थोड़ा दना पाछअ फेर बुखार आज्या छ, थानअ दूसरी दुवाई की जुरूरत पड़ सकअ छ। खनअ का डाखाना सूं सलाह बी ले सकअ छ।

4 जीं आदमी कअ मलेरियो छ अर अगर ऊंनअ दोरा पड़र्या छ।

- जोर की बुखार।
- जोर सूं माथो दुखअ छ।
- अकड़ेड़ी नाड़ व बाळक जादा बेमार छ।
- अकड़ेड़ी कणियां सूं नाड़ नअ बी गोडां कअ न लगा सकअ।
- एक साल का बाळक को ताळवो ऊपर की ओर नकळेड़ो छ।
- उल्टचां बी हअ छ।
- बाळक उणिदो (नींद न आबो) रअ छ या चड़्यावणो हअज्या छ।
- कसी बी चीज नअ खाबा को मन न करबो।
- कद्यां-कद्यां दोरा पड़बा लागज्या छ अर सरीर मअ अजीब सी हरकतां बी हअबा लागज्या छ।
- बाळक की हालात खराब हअज्या छ अर वो बेहोस हअज्या छ।

मलेरिया सूं कियां बचणो चाईजे:-

मलेरिया की संसार का गरम अत उस्णकटिबन्धी देसां मअ जादा समस्या बणेड़ी छ, अगर सारा आदमी मलर सयोग करअ तो ईं रोग पअ काबू पा सकअ छ। ईंकअ ताणी ये सबळा बचाव का कामा नअ एक ई टेम पअ सुरू करणो चाईजे।

1 माच्छरां सूं बचणो चाईजे। जीं ठोर पअ सोणो चाईजे जण्डअ माच्छर न हअ, आदमी मच्छरदानी लगार या लत्ता ओढर सोणो चाईजे।

2 बाळक का सरीर पअ सरस्यूं का तेल की मालिस करणो चाईजे जिसूं माच्छर न खावअ

3 जद मलेरिया नअ रोकबाळा करमचारी थांका गांव आवअ तो वांको पूरो सअयोग करो। परवार मअ कोई नअ बुखार आर्यो छ तो वां करमचारी नअ जरूर बताणो चाईजे अर बेमार आदमी का खून की जांच कराणो चाईजे। अपणा घरां मअ माच्छरां नअ मारबा की दुवाई को छड़काव बी कराणो चाईजे, जिसूं माच्छर मरज्या (दुवाई को छड़काव करती टेम खाबा-पीबा की सब चीजां नअ ढकणो चाईजे)।

4 अगर कोई कअ भी मलेरियो हअज्या छ तो बेगा-साक मलेरिया की दुवाई देणो चाईजे। अगर थे निकां छ, तो थानअ माच्छर खार बी दूसरा आदमी नअ खाज्या तो ऊंकअ मलेरिया हअबा को डर कोनअ।

5 अगर मलेरिया सूं बचणो छ तो दुवाई लगातार लेणो चाईजे।

6 माच्छरां नअ अर वांका बच्या/ अण्डा नअ खत्म करद्यो। माच्छर भरेड़ा गन्दा पानी मअ जादा हअ छ। तळाव, खाडो, टूटया-फूटया डब्बा या बरतन नअ हटाद्यो। तळाव या कादा की ठोर नअ साफ करद्यो या ऊंपअ थोड़ो-सो कड़ो तेल पटकद्यो अर घरां कअ खनअ

गन्दगी न रांखणो चाईजे।

सरकार की योजना

खेती पअ लून

पीसा कुण-कुणनअ मल सकअ छ लेबाळा -: ज्यांका खाता को ईं टेम सूं लेर दो साल तक चोखो लेण-देण हियो छो, अर ज्यो खेती सूं कम सूं कम तीन हजार (3000) रफ्या छ या ऊंसूं जादा रफ्या कमावअ छ। बेंक मेनेजर ऊंनअ ओर नियो रण (रफ्या) बी दे सकअ छ। जे वो ऊंकी साख-बाड़ी पअ ईं पूरो निरभर हअवअ।

लून का रफ्या बांटबा/देबा को तरीकोः-

रण (रफ्या) को विवरण -: पूरो रण (रफ्या) बना कोई उपरी सीमा कअ नगद दिया जा सकअ छ। नगद लेबा कअ तोड़ी पाळती नअ ए.टी.एम.कार्ड बी दिया जार्या छ

जांच-पड़ताल अर नवनीकरणः-

किसान क्रेडिट कार्ड की सीमा (चालू) पांच 5 साल तक छ अर ऊंकी एक साल की जांच-पड़ताल हअवली।

जांच-पड़ताल कअ आधार सूंईं सूविधा नअ जियां को जियां या लगातार बी रांख या बडायो/घटायो जा सकअ छ।

जमा कराबोः-

फसल नअ काटयां पाछअ ज्यो पअदा हवअ ऊंनअ बकतांईं ब्याज

समेत पूरा रफ्या जमा कराणो पड़अलो। या फेर फसल की कटाई कअ पाछअ 31 जनवरी सूं लेर 31 जुलाई तक करा सकअ छ।

आदमी की दुरघटना बीमा की योजनाः-

जीं बी पाळती कन किसान क्रेडिट कार्ड छ वो 50000 हजार रफ्या तक, आदमी को दुरघटना हअबा पअ लेबा को हकदार छ। जिंका एक साल का 15 रफ्या लागअ छ, जिमअ सूं बेंक 10 रफ्या देवअ छ अर 5 रफ्या लेबाळा नअ देणो पड़अ छ। 70 साल सूं जादा का आदमी को बीमो कोन हअ सकअ।

करसी (खेती) स्वर्ण योजनाः-

सारा पाळत्यां नअ स्वर्ण योजना को रण (रफ्या) दियो जा सकअ छ। करसी (खेती) को ब्याज दर 7% छ। टेम सूं भुगतान करबा पअ ब्याज मअ लेबाळा नअ 3% की छूट दी जावअ छ। भुगतान को टेम 6 मअना सूं लेर 30 मअना को रअ छ।

आपके विचार

आपके पास ढुँढाड़ी या अन्य किसी भी भाषा का साहित्य संग्रह हो (जैसे कहानियाँ, कहावतें, चुटकले, मुहावरे, जीवनी, इतिहास, नाटक, भजन, कवितायें, पौराणिक कथा, लोकगीत, पहेलियाँ, इत्यादि) तो, हम उसको आपके नाम पते व फोटो के साथ प्रकाशित करेगें जिससे अपनी भाषा को बढा़वा मिलेगा व आपका नाम भी रोशन होगा।

अत: आपसे अनुरोध है कि इस कार्य को बढ़ावा देने में हमारी मदद करें। आपका आगमन एवं लेख हमेशा स्वागत योग्य है।

धन्यवाद